विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

भाषा शिक्षा विभाग

Department of Education in Languages

दृश्यांकन

भाषा sangam

a visualscape

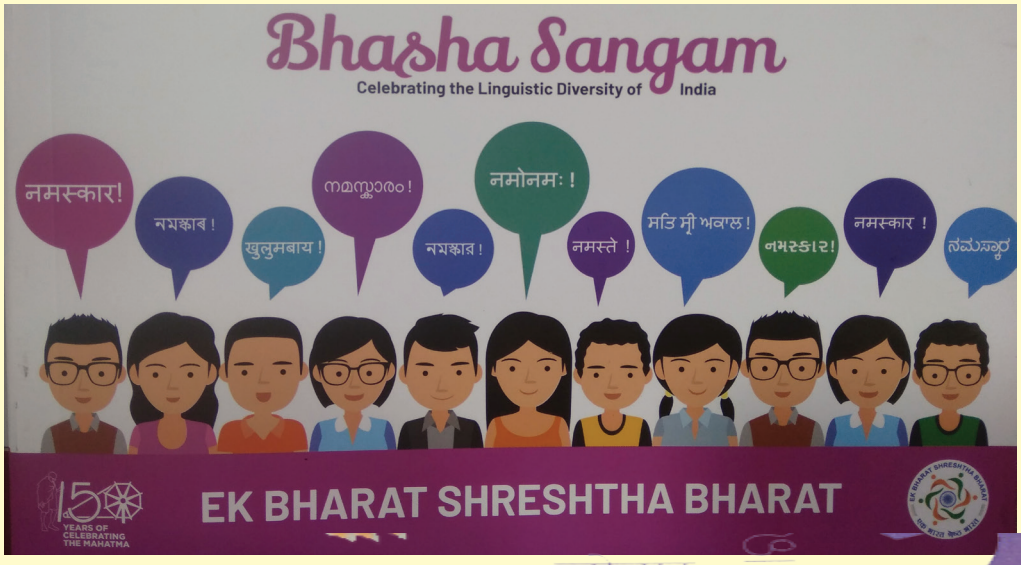

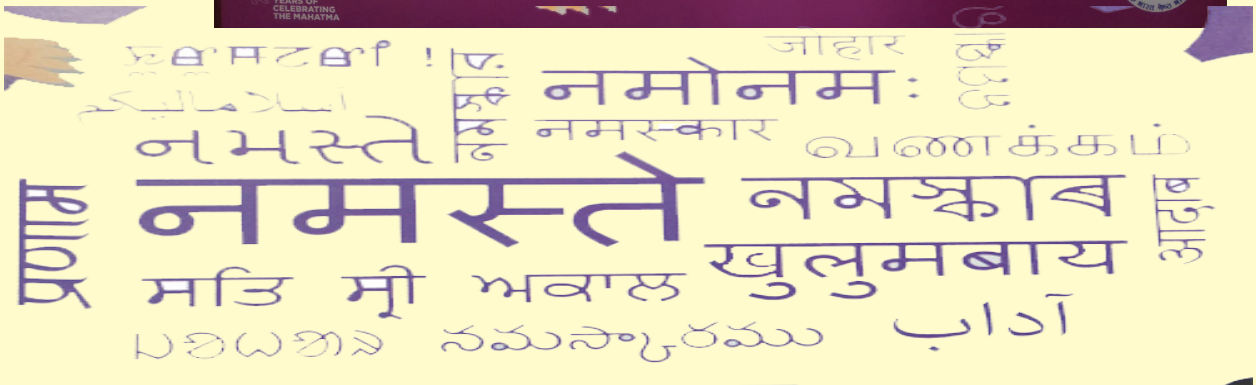

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training

निदेशक की कलम से...

The Department of Education in Languages has brought out the second issue of their online Newsletter **भाषाsangam-a visualscape.** The second issue is developed to mark the International Mother Language Day on February 21, 2019.

As we all know our laguages are the carriers of our heritage and a binding force of the people of the country. The plurality of the languages is a manifestation of our culture, folklore, ideas, thoughts, and way of life.

We promote the use of mother tongue in teaching-learning processes, and as a medium of expression of the children. **भाषाsangam-a visualscape** have glimpses of the perspective of the department and their initatives.

I convey my best wishes to the department for this endeavour.

Hrushikesh Senapaty
Director
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi– 110 016
20.02.2019

One must know and recognize not merely the direct but the secret power of the word

—T. Feret

संपादक की कलम से...

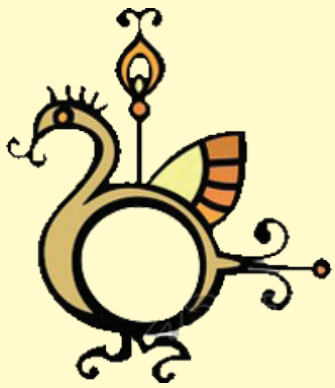

भाषा की जगह

इन दिनों भाषाओं की चिंता पूरी दुनिया की चिंता बन चुकी है। यानी हमारी भाषाएँ भी अब अंतराराष्ट्रीय मुद्दा हैं। पर किसी बात का अंतरराष्ट्रीय होना जहाँ एक और आश्वसत करता है वहीं दूसरी ओर एक आशंका भी होती है कि कहीं लोक और उसकी ज़मीनी हकीकत छूट न जाए। लोकभाषाएँ, लोक और उनकी ज़मीनी सच्चाई हमारी चिंता के केंद्र में होनी चाहिए। देश की आज़ादी का सपना लोक के बिना संभव न था। देश के विकास का भी कोई नक्शा लोक की समस्याओं को छोड़कर नहीं बन सकता। इसी तरह लोक और लोकभाषाओं को छोड़कर भी किसी विकसित देश की परिकल्पना नहीं हो सकती। भाषा शिक्षा विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यक्रमों का केंद्र बिंदु भी इनके इर्द-गिर्द रहता है।

पिछले दिनों एनसीईआरटी ने ***भाषा संगम*** नाम से एक पुस्तिका प्रकाशित की जिसमें संविधान की आठवीं अनुसूची की बाईस भाषाओं के कुछ परिचयात्मक वाक्यों को तीन लिपियों में दिया गया है। विभाग के दृश्यांकन के आवरण पृष्ठ पर इसकी एक झलकी दी गई है। ध्यान देने की बात है कि जिस ***भाषा संगम*** नाम को भाषा शिक्षा विभाग ने **दृश्यांकन** के रूप में बहुत पहले शुरू किया था अब उस नाम पर पूरे देश की स्वीकृति की मुहर भी है।

भाषा एक कला है और कला भी एक भाषा है। *'कलाभाषा'* के नाम से कुछ चित्रांकन भी इस अंक में शामिल हैं। तो पिछले दिनों विभाग में किए गए कुछ कार्यक्रमों की झलकियों से आप विभाग का *'insight'* भी पा सकते है।

इस अंक का *'भाषा-वृतांत'* विस्तृत है। इसमें *'भारतीय भाषाओं की अस्मिता और संकट'* पर सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह का वक्तव्य दिया गया है। भाषाओं के संकट को लेकर एक बेबाक आवाज़ के रूप यह पठनीय और संग्रहणीय है। संस्कृत भाषा को लोकव्यवहार की भाषा के रूप में देखते हुए एक रपट भी इसी के अंतर्गत शामिल है।

विभाग में हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और ऊर्दू चारों ही भाषाओं में शोध/ अध्ययन किया जा रहा है। भाषाओं के अध्ययन की ज़मीनी हकीकत का अनुभव *'Ground Realities'* का हिस्सा है। प्रकृति खुद एक भाषा है। हमारी कक्षाएँ इस भाषा से *'रुबरू'* कराने की खिड़की हो सकती हैं। किताबों से ऐसे ही कुछ अंश *'रुबरू'* में।

संस्कृति क्या हैं? कब से है? कहाँ से शुरू? किसने बनाया? ये कुछ ऐसे सवाल हैं जिनपर सबकी अलग-अलग राय हो सकती है। पर इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि हम सब इस संस्कृति के हिस्से हैं। यह (संस्कृति) निरंतर हमारे आप-पास और स्वयं इसमें चुपचाप कुछ जोड़ती रहती है। हर दिन कुछ कदम चलकर इसकी आहट हम सुन सकते हैं। ऐसी ही कुछ पदचाप की आहट *'Feather in the Cap'* के ज़रिये मिल सकती है।

'स्वयं प्रभा चैनल' के अंतर्गत भाषा और भाषा के लोगो से सीधे-संवाद से *'रुबरू'* होंगे तो *'Yester Years'* में पिछले वर्षों में भाषा संबंधी प्रकाशनों की कुछ झलकियों से भी।

कुछ स्मृतियाँ उन लोगों की जिन्हें किताबों में पढ़ते हैं....। कुछ वे भी जिनकी मुस्कुराहट कलतक एनसीईआरटी के हर कोने, हर दरोदीवार पर थी, अब भी उनकी सुगंध हवा मे है.....

पहले अंक की तरह ही इस दूसरे अंक का भी निश्चित रूपाकार या तयशुदा विषय नहीं है। खुलापन खुद एक आकार बनता जा रहा है। इन सब खूबियों (कमियाँ भी) के साथ अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस (21 फरवरी 2019) के अवसर पर भाषा विभाग के *'दृश्यांकन'* का यह दूसरा अंक ***भाषा संगम*** के रूप में आपके सामने है। इस खुले मंच पर सुझावों के साथ आप सबका स्वागत है....

भाषा संगम के इस अंक को तैयार करने में पूरे ***भाषा शिक्षा विभाग*** ने सहयोग किया है। अकादमिक रूप से सहयोग के लिए हम फारुख अंसारी, प्रोफेसर, चमन आरा ख़ान, एसोसिएट प्रोफेसर, ऊर्दू; के.सी. त्रिपाठी, प्रोफेसर, जतीन्द्र मोहन मिश्र, प्रोफेसर, संस्कृत; संजय कुमार सुमन, प्रोफेसर, नरेश कोहली, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी; मीनाक्षी खार, एसोसिएट प्रोफेसर, आर.मेघानाथन, एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी; राबिया नाज़, जे.पी.एफ.,ऊर्दू; के आभारी हैं तथा तकनीकी सहयोग के लिए श्रीमती रेखा, कु.अनीता, मोहम्मद वसी, डी.टी.पी.ऑपरेटर, भाषा शिक्षा विभाग, कु. शारदा (system analyst) और श्रीमती रेनू (Content Developer), सीआईईटी के आभारी हैं।

विशेष रूप से हम डा. मीनाक्षी खार के आभारी हैं जिनकी लगन के बिना यह संभव न था।

छपते छपते..... खबर है कि भाषा की दुनिया के अद्भुत विचारक, हिंदी की दुनिया में वैचारिकी और वैज्ञानिकी ताज़गी से उजास भर देने वाले अद्भुत व्यक्तित्व डॉ. नामवर सिंह नहीं रहे।

सलाम और अलविदा!

संध्या सिंह
विभागाध्यक्ष
भाषा शिक्षा विभाग

Languages are the most massive and inclusive art we know, a mountainous and unconscious work of anonymous generations

—Edward Sapir

Inside...

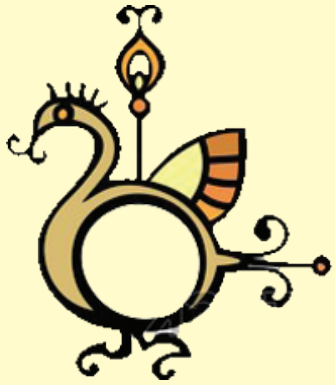

1. Bhasha Sangam
2. एक पहचान
3. कला भाषा
4. Insight
5. भाषा वृतांत
6. Ground Realities
7. Window in the Classroom
8. Feather in the Cap
9. रुबरू
10. Yester Years
11. Rest in Peace

किसी भाषा में साहित्य नहीं बना, तो क्या वह भाषा ही नहीं रही? किसी थाली में नित्य भोजन की दाल-रोटी रखी जाती है, खीर नहीं परोसी गई, तो क्या उसे थाली ही न कहेंगे? प्रत्यय-विभक्तियों में रूपांतरण हो जाना ही सजातीय भाषाओं की भिन्नता का नियामक है। इस दृष्टि से अवधी आदि स्वतंत्र भाषाएँ हैं।

—किशोरीदास वाजपेयी, 'हिंदी शब्दानुशासन', संस्करण, 1976:10